बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप (NATURE OF EDUCATION IN CHILDHOOD)

इस अवस्था मे बालक विद्यालय मे जाने लगता है और उसे नवीन अनुभव प्राप्त होते है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया के मध्य उसका विकास होता है।

बाल्यावस्था शैक्षिक दृष्टि से बालक के निर्माण की अवस्था है। इस अवस्था में बालक अपना समूह अलग बनाने लगते हैं। इसे चुस्ती की आयु भी कहा गया है।इस अवस्था मे शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार होता है-

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन ने लिखा है- **बाल्यावस्था वह समय है, जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोणो मूल्यों और आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है**।" "Childhood is the time when the individual's basic outdooks, values and ideals are to a great extent shaped"-Blair, Jones and Simpson (p. 62).

जिस निर्माण की ओर संकेत किया गया है, उसका उत्तरदायित्व बालक के शिक्षक माता-पिता और समाज पर है। उसकी शिक्षा का स्वरूप निश्चित करते समय उन्हें निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए!

1. **भाषा के ज्ञान पर बल** (Emphasis on the knowledge of Language)-स्टंग (Sang (p 386) के अनुसार इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रुचि होती है। इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे।

2. **उपयुक्त विषयों का चुनाव** (Selection of Subjects)- बालक के लिए कुछ ऐसे विषय का अध्ययन आवश्यक है, जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और उसके लिए लाभप्रद भी इस विचार से निम्नलिखित विषयों का चुनाव किया जाना चाहिए भाषा विज्ञान सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग चित्रकला सुलेख पत्र-लेखन और निबन्ध-रचना।

3. **रोचक विषय-सामग्री** (Interesting subject material)- बालकों की रुचियों में विभिन्न और परिवर्तनशीलता होती है। अत: उसकी पुस्तकों की विषय सामग्री में रोचकता और विभिन्नत होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से विषय-सामग्री का सम्बन्ध निम्न लिखित होना चाहिए पशु हास्य विनोद नाटक वार्तालाप, वीर पुरुष, साहसी कार्य और आश्चर्यजनक बातें

4. **पाठ्य-विषय व शिक्षण विधि में परिवर्तन** (Change in Curriculum and Methods of Teaching) इस अवस्था में बालक की रुचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। पाठ्य-विषय और शिक्षण में उसकी रुचियों के अनुसार परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। ऐसा न करने से उसमे शिक्षण के प्रति कोई आकर्षण नहीं रह जाता है। फलस्वरूप उसकी मानसिक प्रगति रुक जाती है।

5. **जिज्ञासा की सन्तुष्टि** (Satisfaction of Curiosity) बालक में जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है। अतः उसे दी जाने वाली शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे उसकी इस प्रवृत्ति की तुष्टि हो ।

6. **सामूहिक प्रवृत्ति की संतुष्टि** (Satisfaction of Gregariousness)-- बालक में समूह में रहने की प्रबल प्रवृत्ति होती है। वह अन्य बालकों से मिलना-जुलना और उनके साथ कार्य करना या खेलना चाहता है। उसे इन सब बातों का अवसर देने के लिए विद्यालय में सामूहिक कार्यों और सामूहिक खेलों का उचित आयोजन किया जाना चाहिए। कोलेसनिक (Kolesnik) (p.37) के अनुसार सामूहिक खेल और शारीरिक व्यायाम प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग होने चाहिए।"

7. **रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था** (Arrangement of Creative Work)- बालक की रचनात्मक कार्यों में विशेष रुचि होती है। अतः विद्यालय में विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

5. **पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था** (Co-curricular Activities) बालक की विभिन्न मानसिक रुचियों को सन्तुष्ट करके उसकी सुप्त शक्तियों का अधिकतम विकास किया जा सकता है। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यालय में अधिक से अधिक पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाओं का संचालन किया जाना चाहिए।

9. **पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था** (Excursion and Scouting)- लगभग 9 वर्ष की आयु में बालक में निरुदेश्य इधर-उधर घूमने की प्रवृत्ति होती है। उसकी इस प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करने के लिए पर्यटन और स्काउटिंग को उसकी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

10. **संचय-प्रवृत्ति को प्रोत्साहन** (Acquisitiveness) बालक में संचय करने की प्रवृत्ति होती है। उसे जो भी वस्तु अच्छी लगती है, उसी का यह संचय कर लेता है। उसके माता-पिता और शिक्षक का कर्तव्य है कि वे उसे शिक्षाप्रद वस्तुओं का संचय करने के लिए प्रोत्साहित करें।

11. **संवेगों के प्रदर्शन का अवसर** (Exposition of Emotions)- कोल एवम ब्रूस (Cole and Bruce) ने बाल्यावस्था को संवेगात्मक विकास का अनोखा काल ("A unique stage in emotional development") माना है। यह विकास तभी सम्भव है, जब बालक के संवेगों का दमन न किया जाय, क्योंकि ऐसा करने से उसमें भावना प्रन्थियों का निर्माण हो जाता है। अतः स्ट्रेंग (Strang) (p. 413) का परामर्श है- **'बालकों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त अपने संवेगों का दमन करने के बजाय तृप्त करने में सहायता दी जानी चाहिए, क्योंकि संवेगात्मक भावना और प्रदर्शन उनके सम्पूर्ण जीवन का आधार होता है।"**

12. **सामाजिक गुणों का विकास** (Development of Social Qualities) किर्कपैट्रिक (Kirkpatrick) ने बाल्यावस्था को प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण (Competitive Socializations) का काल माना है। अतः विद्यालय में ऐसी क्रियाओं का अनिवार्य रूप से संगठन किया जाना चाहिए। जिनमें भाग लेकर बालक में अनुशासन, आत्म-नियन्त्रण, सहानुभूति प्रतिस्पर्धा, सहयोग आदि सामाजिक गुणों का अधिकतम विकास हो।

13. **नैतिक शिक्षा** (Moral Education)- पियाजे (Piaget) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण और समाज के नैतिक नियमों में विश्वास करने लगता है। उसे इन मूल्यों का उचित निर्माण और इन नियमों में दृढ विश्वास रखने के लिए नियमित रूप से नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। कोलेसनिक (Kolesnik) (p. 90) का मत है- "बालक को आनन्द प्रदान करने वाली सरल कहानियों द्वारा नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए।"

14. **क्रिया व खेल द्वारा शिक्षा** (Education Through Activity and Play) सभी शिक्षा शास्त्री बालक की स्वाभाविक क्रियाशीलता और खेल-प्रवृत्ति में विश्वास करते हैं। अतः उसकी शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे वह स्वयं-क्रिया (Self-Activity) और खेल द्वारा ज्ञान का अर्जन करे।

15. **प्रेम व सहानुभूति पर आधारित शिक्षा** (Education Based on Love and Sympathy)–बालक कठोर अनुशासन पसन्द नहीं करता है। वह शारीरिक दण्ड, बल प्रयोग और डॉट-डपट से घृणा करता है। वह उपदेश नहीं सुनना चाहता है। वह धमकियों की चिन्ता नहीं करता है। अतः उसकी शिक्षा इनमें से किसी पर आधारित न होकर प्रेम और सहानुभूति पर आधारित होनी चाहिए।

निष्कर्ष

फ्रायड और उसके अनुयायियों ने बाल्यावस्था को बालक का निर्माणकारी काल मानकर इस अवस्था को अत्यधिक महत्व दिया है। उनका कहना है कि इस अवस्था में बालक जिन वैयक्तिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी आदतों एवं व्यवहार के प्रतिमानों का निर्माण कर लेता है उनको रुपान्तरित करना बहुत कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों पर बालकों का निर्माण करने का महान् उत्तरदायित्व है। लगभग ऐसे ही विचारों को व्यक्त करते हुए ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन ने लिखा है- **"शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन-चक्र मे बाल्यावस्था से अधिक महत्त्वपूर्ण और कोई अवस्था नहीं है। जो अध्यापक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें बालकों का उनकी आधारभूत आवश्यकताओं का, उनकी समस्याओं का और उन परिस्थितियों का पूर्व ज्ञान होना चाहिए, जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित करती हैं।"**

"No period during the life-cycle is more important than childhood from an educational point of view. Teachers who work at this level should understand children their fundamental needs, their problems, and the forces which modify and produce behaviour change." -Blair, Jones and Simpson (p. 62)

मनोवैज्ञानिक, बाल्यावस्था को शैक्षिक दृष्टिकोण से विशेष महत्व देते हैं। इस अवस्था में शिक्षा का यथार्थवादी स्वरूप, जो उनकी आवश्यकता, प्रकृति तथा मूल प्रवृत्तियों के शोधन पर आधारित हो, वह बालकों के मूलभूत गुणों को विकसित करने तथा उन्हें स्वस्थ सजग नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।